श्रीराम जानकी प्राण–प्रतिष्ठा महायज्ञ में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–08.03.2017, समय–अपराह्न–12:00 बजे, स्थान–बम्भई कुटी, बरपा, औरंगाबाद)

श्रीराम जानकी प्राण–प्रतिष्ठा महायज्ञ में प्रमुख रूप से उपस्थित श्री रंगरामानुजाचार्य जी महाराज, पूर्व मंत्री श्री रामाधार सिंह जी, स्थानीय विधायक मनोज कुमार जी, श्री श्रीनिवास शर्मा जी, श्री हरेराम जी, यज्ञ आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री कामदेव शर्मा जी, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

बम्भई कुट्टी बरपा आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मुझे बताया गया है कि यह पूरा इलाका पुनपुन और मदार नदी के संगम पर अवस्थित है और इसी संगम स्थल पर कार्तिक पुर्णिमा के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है, जो महान ऋषि भृगु के नाम पर भृगुहारी मेला के नाम से जाना जाता है। क्षेत्रीय जनता का विश्वास है कि यहाँ से कुछ ही दूरी पर प्राचीन काल में महान भृगु ऋषि का आश्रम था।

लोक आस्था है कि जिस स्थान पर आज राम जानकी का नवनिर्मित मंदिर बन कर खड़ा है, वहाँ कभी प्राचीन काल में भी एक भव्य मंदिर था, जिसके अवशेष पर ही आज मंदिर का नवनिर्माण किया गया है। जन–आस्था और विश्वास के सन्दर्भ में इस क्षेत्र में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक शोध की आवश्यकता है। इन सब बातों का निहितार्थ यही है कि इस क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है, जिससे यहाँ के लोगों में अपनी विरासतों, अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के व्यक्तित्वों, परम्पराओं आदि के प्रति अपूर्व गौरव–बोध विद्यमान है। आपका यही गौरव–बोध आपकी सांस्कृतिक पहचान है।

'श्रीराम जानकी प्राण–प्रतिष्ठा महायज्ञ' में पहुँचकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई है। मित्रों, ऐसे आयोजनों से हमारे भीतर आत्मबल विकसित होता है और सदाचार के पथ पर अग्रसर होने की हमें प्रेरणा मिलती है। पूरे समाज के लोग जब एक साथ एकत्रित होकर हृदय की पवित्रता, भक्ति, नैतिकता और मर्यादा आदि पर महात्माओं और साधु–सन्तों के विचार सुनते हैं, तो उनके भीतर सत्यनिष्ठा, तपस्या, त्याग और बंधुत्व की भावना मजबूत होती है। समाज में मेला, यज्ञ, पर्व, त्योहारों आदि के आयोजन का यही महत्त्व है कि हम सामूहिक रूप से एकत्रित होकर सबके मंगल एवं कल्याण की बातें सुनें, समझें और उसपर चिन्तन–मनन करें।

कोई भी धर्म हो, सभी भाईचारा और प्रेम की ही शिक्षा देते हैं। 'धर्म' वही है जो धारण करने योग्य हो और धारण वही किया जा सकता है, जो समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी हो, मंगलकारी हो। समाज में समता हो, शांति हो, भाईचारा हो, प्रेम हो, सभी एक दूसरे के प्रति सम्मान और आदर का भाव रखें, सभी एक दूसरे के लिए त्याग और सहिष्णुता की भावना रखें –इन्हीं सब बातों से देश की एकता को ताकत मिलती है। कोई भी धर्म हो, सभी हमें अच्छा इंसान बनने की शिक्षा देते हैं। अगर आप हिन्दू हैं तो एक अच्छे हिन्दू के रूप में अपनी पहचान बनायें, अगर आप मुसलमान हैं, तो अच्छे मुसलमान के रूप में अपनी पहचान बनायें। एक अच्छा इंसान बनकर ही आप अच्छा हिन्दू या अच्छा मुसलमान बन सकते हैं। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सभी धर्मों के लोग रहते हैं। सभी धर्मों, सभी जातियों, सभी संस्कृतियों के सुन्दर सम्मिलन से ही भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान और विरासत समृद्ध होती है। 'विविधता के बीच एकता' –हमारे देश की यही विशेषता है। हमारे देश का संविधान भी सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता की मूल अवधारणा पर जोर देता है। 'हमारा

संविधान' एक मर्यादा–ग्रन्थ है। इसकी 'प्रस्तावना' में ही वह मंत्र दिया गया है, जिससे अनुशासित और नियंत्रित होकर हम एक गौरवशाली देश के आदर्श नागरिक बन सकते हैं। हमारे देश की 'धर्मनिरपेक्षता' का मतलब यही है कि हम सभी एक दूसरे के धर्मों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते हैं। तुलसीदास जी ने जब श्रीराम और सीता को अपना आराध्य बनाया, तो उनकी भी यही कामना थी कि–

''सीयराम मय सब जग जानी

करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।''

–अर्थात् पूरी दुनियाँ को वे 'सीयाराम मय' मानते थे। 'सीयाराम मय' मानने का मतलब –पूरी दुनियाँ को एक समान मानना है –जिसमें न कोई छोटा है, न कोई बड़ा। और अगर कोई समाज के विकास में थोड़ा पिछड़ भी गया है, तो उस अभिवंचित वर्ग को भी सभी मिलकर आगे बढ़ाने का काम करेंगे, उसके लिए भी त्याग दिखायेंगे। समाज में समता रहेगी, तभी शांति रहेगी, भाईचारा रहेगा, प्रेम रहेगा। इसलिए यज्ञ, मेला, पर्व–त्योहार इन सबके सामूहिक आयोजन का मतलब यही होता है कि सबको विकास के समान अवसर उपलब्ध कराते हुए सबके कल्याण की कामना की जाये। समाज में व्यक्ति जब परोपकार की भावना से काम करता है तो उसकी सर्वत्र प्रशंसा होती है। 'रामचरित मानस' में कहा गया है कि–

''परहित सरिस धरम नहिं भाई

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।''

–अर्थात् दूसरे के लिए कल्याणकारी काम करना सबसे बड़ा धर्म है और दूसरे को कष्ट पहुँचाना, प्रताड़ित करना –सबसे बड़ा अधम है, पाप है।

आपके इस यज्ञ–आयोजन का भी यही मूल लक्ष्य है, यही महत्वपूर्ण उद्देश्य है कि समाज में भाईचारा बढ़े, प्रेम बढ़े, सभी एक–दूसरे के सुख–दुःख में शामिल हों, सभी एक–दूसरे के विकास में सहयोगी बनें, ताकि अपना भारत देश और पूरा समाज तेजी से प्रगति कर सके। मैं इस महायज्ञ के सफल आयोजन के लिए श्री रंगरामानुजाचार्य जी, श्री हरेराम जी, पूर्व मंत्री श्री रामाधार जी, विधायक श्री मनोज जी, श्री कामदेव शर्मा जी, श्री श्रीनिवास शर्मा जी सहित यज्ञ–आयोजन समिति के सभी सदस्यों एवं बम्भई कुटी बरपा की आम जनता को हार्दिक बधाई देता हूँ। होली का त्योहार शीघ्र ही आनेवाला है। आप सभी मिलजुल कर उमंग और उल्लास के साथ यह पर्व आयोजित करें। मैं आप सबको होली की भी अग्रिम शुभकामना देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।